मोतीलाल नेहरू महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

अभिव्यंजना: वाद-विवाद, कविता एवं रचनात्मक लेखन समाज

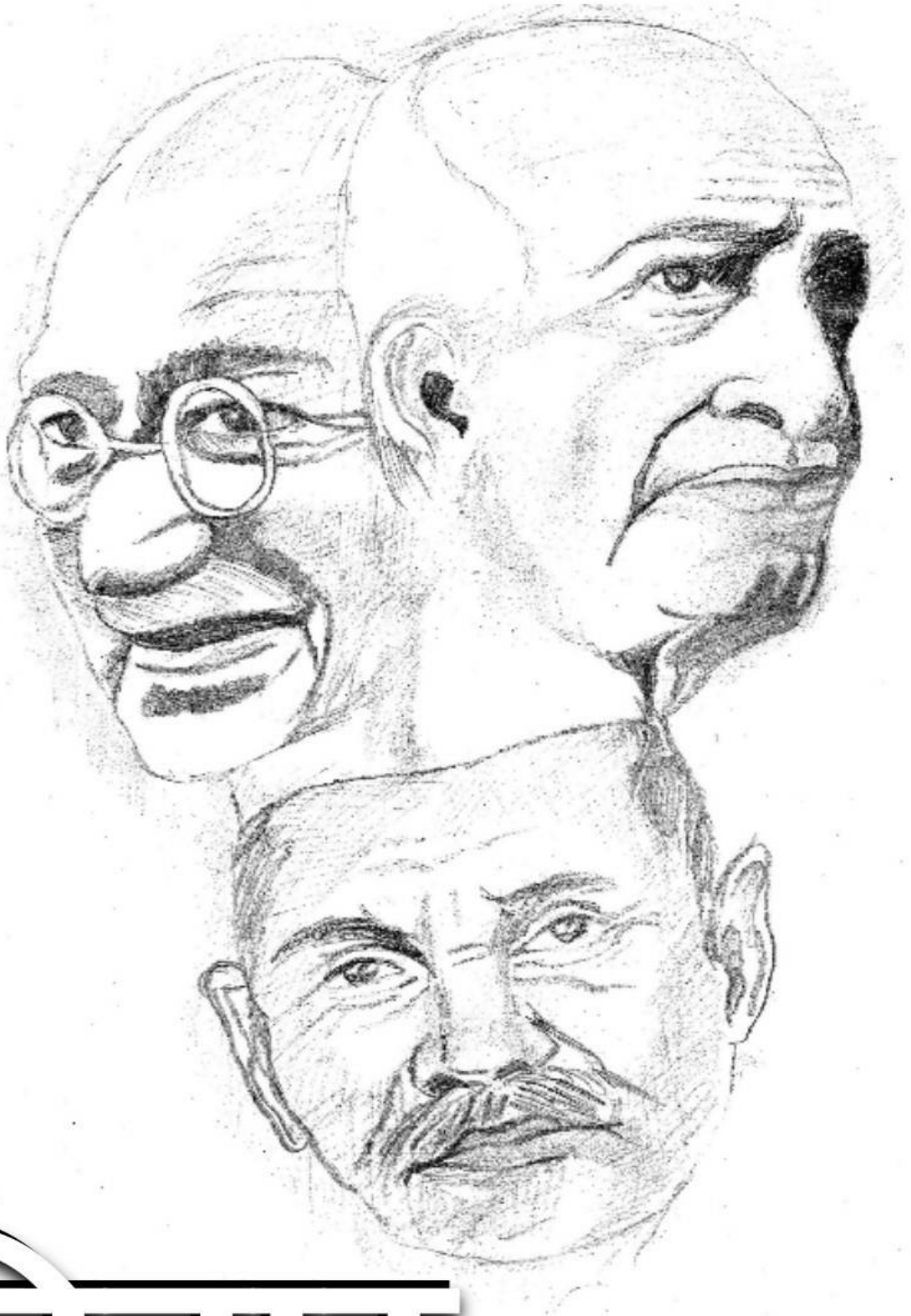

निनाद

अक्टूबर 2019 (प्रथम संस्करण)

निनाद

अक्टूबर 2019 (प्रथम संस्करण)

संपादक : शुभांजल
उपसंपादक : क्षितिज भट्ट 'विक्रमादित्य'
ग्राफिक डिज़ाईनर : प्रदीप
मुखपृष्ठ चित्रण : सोनाली झा

अभिव्यंजना: वाद-विवाद, कविता एवं रचनात्मक समाज
मोतीलाल नेहरू महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

संपर्क सूत्र:-

फोन : 9525361943
ईमेल : abhivyanjanahindiofficial@gmail.com
: abhivyanjanamlnc.du
: abhivyanjanamlnc

संपादकीय

अगर 'अभिव्यंजना' परिवार के वर्तमान सदस्यों को छोड़ दिया जाये तो किसी को कानों-कान तक खबर नहीं थी कि हम अपनी ई-पत्रिका शुरू करने वाले हैं। और अपने पहले अंक के लिए यूँ सम्पादकीय लिखते वक्त खुशी तो हो ही रही, साथ ही गर्व भी हो रहा कि हम 'निनाद' के इस प्रथम संस्करण के साथ ही दिल्ली विश्वविद्यालय की पहली ऐसी सोसाईटी बन गए, जिसने खुद की पत्रिका प्रकाशित की हो। और ऐसा हो सका इसके लिए हम आभार व्यक्त करते हैं उन सभी लोगों का जिन्होंने प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप में हमें निरंतर प्रोत्साहित किया। शुक्रिया आप सबका।

शुरुआत में ख्याल था कि हम पेपर पत्रिका ही प्रकाशित करें, परन्तु छात्र वर्ग से होने के कारण लगातार आर्थिक सहयोग मिल पाना सम्भव न होता। समय की कमी के बीच पेपर पत्रिका की निरंतरता बरकरार रख पाना जरा कठिन है। इसलिए ख्याल आया कि क्यों न हम डिजिटल पत्रिका ही निकालें। इसका फायदा ये है कि ऑनलाईन माध्यम से ही घर बैठे-बैठे चुटकियों में सारा काम भी हो जाएगा और चुटकियों में ही ये पत्रिका पलभर में अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुँच भी जाएगी। और वैसे भी ऐसे वक्त में, जब चीजें धीरे-धीरे पेपर से डिजिटल होती जा रही, हमारा डिजिटल से पेपर की तरफ जाना इस दौर में कोई समझदारी भरा फैसला नहीं होता। इसलिये हमनें सोच-विचारकर इसे ई-पत्रिका की शक्ल देना ही सही समझा। और चूँकि हमनें इसे प्रकाशित करने का फैसला अक्टूबर मध्य में ही लिया था, तो ख्याल आया कि क्यों न विशेषांक के तौर पर इसे अक्टूबर माह में जन्मे भारत राष्ट्र के तीन महापुरुष महात्मा गाँधी, सरदार वल्लभभाई पटेल और लालबहादुर शास्त्री को समर्पित किया जाए। साथ ही इस महीने डॉ० कलाम का भी जन्मदिवस पड़ता है जिनपर उन्हें समर्पित एक आर्टिकल आपको पत्रिका के शुरुआती पन्नों में ही देखने को मिल जाएगा।

आमतौर पर ये देखा जाता है कि मासिक पत्रिकाएँ महीने की शुरुआत या मध्य तक प्रकाशित हो जाती हैं पर चूँकि ये हमारा पहला संस्करण है, इसलिए हमनें इसे आज अक्टूबर माह के अंत में, यानि आज 31 अक्टूबर को प्रकाशित करने का फैसला लिया। आज सरदार पटेल की

जयंती है और ये पत्रिका 'अभिव्यंजना' परिवार की ओर से उन्हें समर्पित हमारी श्रद्धांजलि है।

एक सवाल आता है कि इस ई-पत्रिका का नाम 'निनाद' ही क्यों पड़ा? शब्दकोश में जाएँगे तो इस शब्द का अर्थ दिखेगा-'जोर की आवाज़'। और पत्रिका का नाम भी 'निनाद' पड़ने की मुख्य वजह कुछ ऐसी ही है। इस पत्रिका को हम छोटे ही सही, मगर ऐसे रूप में देखना चाहते हैं, ऐसी भावना, ऐसे विचार, ऐसी आवाज़ के रूप में देखना चाहते हैं, जिसकी गूँज दसों दिशाओं में हो। जिसके माध्यम से निकले विचार लोगों को सोचने पर मजबूर करे। पत्रिका प्रकाशित करने का ख्याल इसलिए आया था ताकि 'अभिव्यंजना' की गतिविधियों के बारे में तो सबको पता चले ही, साथ ही एक मंच मिले सबको खुद को दूसरों से जुड़ते देखने का। कई बार लोगों को मंच नहीं मिलता, और वो आगे नहीं बढ़ पाते। इस पत्रिका के माध्यम से लघुरूप में ही सही, परन्तु कोशिश ये है कि हमारे विचारों की पहुँच और दूर तक फैले। वैसे भी छोटी हो या बड़ी, कहीं किसी पत्रिका में छपने का ख्याल खुद में ही एक बहुत बड़ा प्रोत्साहन देने का कार्य कर देता है। और ऐसा प्रोत्साहन जरूरी भी है। फिर तो सब आगे खुद बढ़ने लगते हैं।

चूँकि ये पहला संस्करण है, इसलिये एक आजमाईश के तौर पर हमनें महज 'अभिव्यंजना' परिवार के सदस्यों से ही सामग्रियों को एकत्रित किया है। आगे से सामग्रियों के लिहाज से आप सबके लिए भी आमंत्रण होगा। प्रयास होगा कि हम विशेषांक ही निकालें। हमारा पहला प्रयास है ये। काफी कुछ अकेले 'निनाद' के इस प्रथम संस्करण को प्रकाशित करने के दौरान सीख लिया हमनें, काफी कुछ अभी भी सीखना है। समय के साथ हम बेहतर होते जाएँगे, ये हमारा वादा है। आशा है आप भी हमारा इसी प्रकार से निरंतर सहयोग करते रहेंगे। शुक्रिया।

- **शुभांजल**

कमाल के कलाम

- समृद्धि गोयल

डॉ० ए.पी.जे.अब्दुल कलाम का बचपन तो बेहद सामान्य था, परन्तु उनकी सोच कुछ ऐसी थी, जिसने उन्हें हर किसी का खास बना दिया। इतना खास की वे 'पिपलज़ प्रेसिडेंट' यानि कहे जाने लगे। अपने परिवार को आर्थिक रूप से समर्थन देने के लिए कलाम ने बचपन में समाचार पत्र बेचने का काम किया। अपने भाग्य को कोसने की बजाय उन्होंने समाचार पत्रों से जानकारी जुटानी शुरू की। जबतक वे जीवित रहे, उन्हें रेडियो-अखबारों से ही खबरें मिली। कलाम एक राजनीतिक हस्ती से कहीं अधिक थे। एक वैज्ञानिक के तौर पर उन्होंने डी.आर.डी.ओ प्रमुख के तौर में पोखरण-२ विस्फोटों की दिशानिर्देशिता की थी। देश के विकास में वह पल एक निर्णायक क्षण था। कलाम एक लेखक, एक प्रेरक वक्ता और वीणा वादक भी थे। उनके स्वभाव में, उनके हर अंदाज़ में एक विनम्रता थी।

जब डॉ० कलाम पहली बार राष्ट्रपति भवन गए, तो उन्होंने सभी आलीशान कमरों को बंद कर देने के लिए कहा, क्योंकि वह उनका इस्तेमाल नहीं करना चाहते थे। वह एक छोटे से कमरे में ही रहकर अपना सारा काम करते, और उसी में ही सोते भी थे। उन्हें लगता था कि उनके लिए उतनी जगह पर्याप्त है। उन्होंने अपने भोजन कक्ष को भी बंद कर दिया था और अक्सर अपने कर्मचारियों के साथ फर्श पर ही बैठकर भोजन करते थे। अगर आप सोच रहे हैं की इतने बड़े हस्ती के पास तो बहुत-सी सम्पत्ति होगी, तो आप सही सोच रहे हैंै। मगर उनकी सम्पत्ति धन या दौलत नहीं बल्कि उनकी विनम्रता, गरिमा और दयालुता थी। वह किताबों के अलावा और कोई भी तोहफ़ा स्वीकार नहीं करते थे। उनके पास ना तो कोई फ्रिज था, न टीवी, न कार, ना ही कोई एयर कंडीशनर। सार्वजनिक सेवा में पाँच दशक बिताने के बावजूद, जिसमें गणतंत्र के राष्ट्रपति के रूप में उनका कार्यकाल भी शामिल है, उनके पास सम्पत्ति के नाम पर केवल एक घड़ी, छह शर्ट, चार पतलून, तीन सूट , एक जोड़ी जूते और कुछ किताबें थी। कलाम की

विशेषता उनकी सामान्यता में ही अंतर्निहित थी। कलाम ने अपने कर्म से अपनी किस्मत की कलम पर नियंत्रण पा लिया। हर वो आँख, जो नींद छोड़कर सपने संजोती है, कमाल है। और हर वो बच्चा, जो अपनी स्थिति से विपरीत जाकर कुछ कर दिखाने की चाह रखता है, कलाम है ।■■■

(चित्र:- कनिष्का)

गाँधी: अपने अनुयायियों के आदर्शों व लक्ष्यों के रूप में

- क्षितिज भट्ट 'विक्रमादित्य'

30 जनवरी, 1948। वह तरीख जब हिन्दुस्तान ने अपना आधुनिक निर्माता खोया था। वो तारीख जिसके बाद दुनिया को लगा था कि अब भारत संयुक्त नहीं रह पाएगा और एक मुल्क की जगह कई नए राज्य अस्तित्व में आ जाएँगे। पर हकीकत कुछ और रही। हकीकत ये रही कि नाथूराम गोडसे द्वारा 30 जनवरी को गाँधी जी की हत्या होने के बाद दिल्ली में होते दंगे रुक गए। पूरा देश धीरे-धीरे शांत हो पाया और जो काम गाँधी जिंदा रहते नहीं कर पाए, वो उनकी मौत ने कर दिखाया। मगर ये सब हुआ कैसे? दरअसल, उस दिन गोली बस गाँधी के शरीर को मारी गई थी। उनकी आत्मा उनके आदर्शों के रूप में, उनके आदर्शों के अनुयायियों के रूप में उसके बाद भी जिन्दा थी और वही ये सब करा रही थी। तो इससे स्पष्ट है कि गाँधी के आदर्श उनके बाद अनुयायियों में शेष हैं, जिनमें से कई खुदको स्पष्ट रूप से गाँधीवादी कहते हैं जबकि कई गाँधीवाद की विचारधारा से अपरिचित होते हुए भी उन्हीं के आदर्शों को आगे बढ़ा रहे है

शुरूआत राजनीतिक विरासत से करते हैं। गाँधी उन विनोबा भावे में जिंदा रहे जिन्होनें भूदान-ग्रामदान आंदोलन चलाया। गाँधी उन लोहिया में जिंदा रहे जिन्होनें 'पिछड़े पाएँ सौ में साठ' की आवाज बुलंद की। गाँधी उन जयप्रकाश के साथ प्रासंगिक रहे जिन्होनें सत्ता की क्रूरता के आगे झुकने से इंकार कर दिया और अहिंसा के माध्यम से पूरे देश को एक कर दिया। गाँधी उन नानाजी देशमुख की आत्मा का अंश रहे जिन्होनें भारत के की सबसे बड़ी विद्यालयों की श्रृंखला प्रारंभ की। गाँधी उन बी पी मंडल के आदर्श रहे जिन्होनें दमित वर्ग के उत्थान के लिए कार्य किए। गाँधी उन नेहरू में प्रतिरूप बनकर रहे जिन्होनें मुश्किल हालातों में देश की स्थिति को संभाला और गुटनिरपेक्षता का सिद्धांत दिया। गाँधी उन सरदार पटेल के दिल

में जिंदा रहे जिन्होनें गाँधी को दिए वचन के लिए नेहरू से अपने सारे विवादों को भुला दिया। गाँधी के विचार वी पी सिंह में दिखाई दिए जब उन्होनें साम्प्रदायिक लहर को रोकने के लिए अपनी सरकार तक कि परवाह नहीं की। गाँधी के विचार चन्द्रशेखर में दिखाई दिए जिन्होनें चापलूसी के बजाए सत्ता छोड़ने को महत्व दिया। गाँधी-सा प्रेम गुजराल के 'गुजराल डॉक्ट्रेन' की पड़ोसी प्रथम नीति में दिखाई दिया। गाँधी सा हठ मनमोहन सिंह में दिखाई दिया क्योंकि उन्होनें शांत रह काम करने को प्राथमिकता दी। गाँधी का स्वरूप नरेंद्र मोदी में दिखाई दिया जब उन्होनें स्वच्छता अभियान की शुरुआत की।

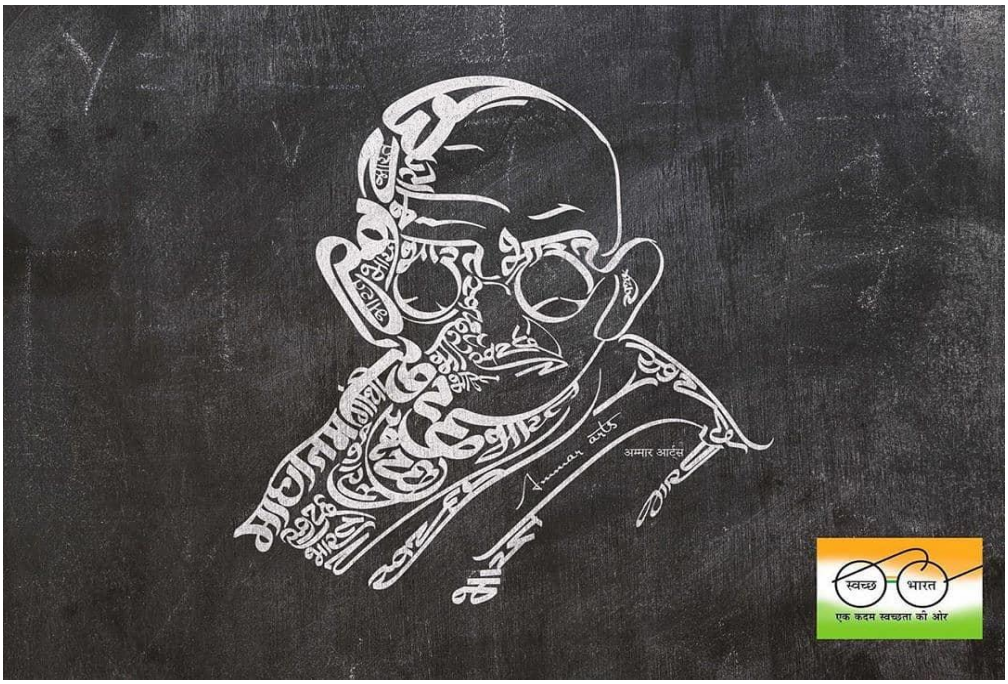

इनके अतिरिक्त गाँधी समाज में अकादमिक जगत के किए गए कार्यों के कारण भी जिन्दा हैं। रामचंद्र गुहा (इंडिया आफ्टर गाँधी), आशीष नंदी (गाँधी आफ्टर गाँधी), डेविड हार्डिमैन (गाँधी: इन हिज़ टाईम एंड अवर्स), रुडोल्फ एंड रुडोल्फ (पोस्ट-मॉडर्न गाँधी एंड अदर एऐसेज़), ए रघुरामाराजू(डिबेटिंग गाँधी) जैसे लेखकों ने गाँधी, उनके

आदर्श, उनके कार्य एवं वर्तमान समय में उनकी प्रासंगिकता पर विस्तृत रूप से चर्चा की है।

उपरोक्त सभी नाम मुख्यधारा के प्रचलित नाम हैं पर गाँधी और उनके विचार यहीं तक सीमित नहीं रहे वरन् वे तो कई ऐसे व्यक्तियों में भी दिखाई दिए जिन्हें मीडिया ने अधिक तवज्जो नहीं दी। उदाहरण के लिए मणिपुर की इरोम शर्मिला ने सशस्त्र बल विशेषाधिकार अधिनियम (आफस्पा) के विरुद्ध 16 वर्षीय भूख हड़ताल कर गाँधी-सी प्रतिबध्दता दिखाई। यही प्रतिबद्धता 1952 में पोट्टी श्रीरामलू ने दिखाई। गाँधी के समान ही 'सत्य ही ईश्वर है' सिद्धांत का पालन आईपीएस ऑफिसर संजीव चतुर्वेदी कर रहे हैं। दिनेश कुमार मिश्रा गाँधी के समान नदियों से और प्रकृति से प्रेम करते हैं। प्रतिष्ठित रेमन मैगसायसाय पुरस्कार विजेता बेजवाड़ा विल्सन सफाई कर्मचारी आंदोलन (एसकेए) के राष्ट्रीय संयोजक हैं और 'मानवीय गरिमा के साथ जीवन जीने के अधिकार' के प्रबल अनुशंसक हैं। समाजवादी चिंतक और लेखक सच्चिदानंद सिन्हा ने अपना जीवन समाजवादी विचारधारा के प्रचार-प्रसार और मानवीय मूल्यों को समाज में स्थापित करने के संघर्ष में खपा दिया है, जैसा कि सिर्फ गाँधी ही कर सकते थे। गाँव गुराई-बदरपुर के ग्राम प्रधान अभिजीत पटेल भारत के सबसे कम उम्र (22 वर्ष 7 दिन) के ग्राम प्रधान हैं जो आलीशान जीवन त्यागकर गाँव के सभी विकास कार्य अपने सम्मुख शुचिता से करा रहे हैं। दिल्ली की शिक्षिका रमा शर्मा ट्रांसजेंडर को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए उसी प्रकार आंदोलित हैं जिस प्रकार गाँधी 'हरिजन' समुदाय के लिए आंदोलित थे। संयुक्त राष्ट्र के 'यंग चैंपियन ऑफ द अर्थ' अमित कुमार सिंह गाँधी की भाँति अत्यंत कम उम्र में पर्यावरण को समर्पित हो चुके हैं। इंजीनियर अरुण गुप्ता गाँधी की भाँति महिला हितों के लिए कार्य करते हुए दिल्ली शहर के पैडमैन बनते जा रहे हैं। सिर्फ ये ही नहीं, इन जैसे लाखों अन्य उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि गाँधी के बाद गाँधी उनके उद्देश्यों के रूप में, उनके आदर्शों के रूप उनके अनुयायियों में जिंदा हैं।

दरअसल, गाँधी कभी हमारे बीच से गए ही नहीं। बस एक नश्वर शरीर का 1948 में अंत हुआ था। बाकी गाँधी जितने प्रासंगिक तब थे, उससे अधिक प्रासंगिक आज हैं, और कल शायद उससे भी ज्यादा होंगे। संक्षेप में, गाँधी इस देश की जरूरत कल भी थे, आज भी हैं और कल भी रहेंगे क्योंकि इस मुल्क के शिल्पकार वही हैं।■■■

'अभिव्यंजना 2019-20'

सरदार वल्लभ भाई पटेल : कर्मठता की मिसाल

- प्रीति वर्मा

सरदार पटेल के जीवन से जुड़ी ये घटना हम सभी के लिए बेहद प्रेरणादायी है। वल्लभभाई पटेल पेशे से एक वकील थे। ये बात उस समय की है जब उनकी पत्नी उनके साथ नहीं अपितु गाँव में रहती थी। उनकी तबियत ठीक नहीं थी और वे लगातार बीमार पड़ रही थीं। उसी दौरान पटेल जी के पास कई बार एक मुकदमे से संबंधित तार आ रहे थे। इस मुकदमे में एक निर्दोष व्यक्ति को सज़ा मिलने वाली थी और सभी चाहते थे कि ये मुकदमा स्वयं वल्लभभाई लड़ें ताकि वह निर्दोष व्यक्ति सजा से बच सके। घर में पत्नी बीमार थी और सरदार पटेल उन्हें उस हाल में छोड़कर जाना नहीं चाहते थे मगर उनकी पत्नी ने उन्हें समझाया कि आप मेरी चिंता न करें। बस बेफिक्र होकर उस निर्दोष व्यक्ति के प्राण बचायें। पत्नी के आग्रह पर वल्लभभाई पटेल मुकदमा लड़ने के लिए शहर आ गए एवं मुकदमे से सम्बंधित तैयारियों में जुट गए।

समय बीता और मुकदमे का दिन आ गया। कोर्ट की कारवाई चलने लगी। सरदार पटेल ने पूरी तैयारी के साथ आये थे व बेहतरीन ढंग से अपना पक्ष रख ही रहे थे कि कोर्ट की कारवाई के दौरान ही उनके पास घर से एक तार आया। सरदार पटेल ने उसी समय उस तार को पढ़ा और फिर उसे अपनी जेब में रख वापस मुकदमा लड़ने लगे। वल्लभभाई ने अपना पक्ष मजबूती से रख उस निर्दोष व्यक्ति को सज़ा होने से बचा लिया। मुकदमा खत्म होने के बाद जब किसी ने उनसे उस तार के संबंध में पूछा तब उन्होंने उत्तर दिया कि इस तार में मेरी पत्नी की देहांत की सूचना थी। इस पर उस व्यक्ति ने आश्चयचकित होकर पूछा इतनी बड़ी सूचना पाकर भी आप अपनी पत्नी के पास होने के बजाय मुकदमा क्यों लड़ रहे थे? इसपर सरदार पटेल ने जवाब दिया-"ये मुकदमा लड़ने के लिए मेरी पत्नी ने ही मुझसे कहा था।

और एक वकील के तौर पर भी मेरा कर्तव्य है कि मैं किसी भी निर्दोष को सजा न होने दूँ।"

सरदार पटेल ऐसे ही थे। लौह पुरूष। कोई भी बात कभी उन्हें उनके कर्तव्यों से डिगा न सकी। आज के दौर में जब दुनिया कामचोरी व बेईमानी को अपना धंधा बना बैठे हैं, हमें सरदार पटेल के जीवन से सीख लेने की जरूरत है।■■■

"मुश्किल समय में कायर लोग बहाना ढूँढते हैं, लेकिन वीर व्यक्ति रास्ता खोजते हैं।"

- सरदार वल्लभभाई पटेल

गाँधी और मैं

- साक्षी

मैंने अपनी छोटी-सी उम्र में कई गाँधी देखे हैं। पहला वो जो पिता के मुख से निकल कर सच्चाई से मुझमें बस गया। फिर वो जो माँ के हर तर्क को अपना नाम देकर मज़बूत करता गया। और सबसे ज़रूरी वो जो मेरी हर ज़रूरत के बदले खुद को न्यौछावर करता गया यानि 'गाँधी नोट'।

भारत में पलने वाले हर बच्चा किसी न किसी रूप में गाँधी को देखता ज़रूर है, भले ही उससे परिचित न हो। मैंने भी हर रोज़ बापू को जिया है, इस बात से बेख़बर कि ये बूढ़ा आदमी, जो दिन-प्रतिदिन अपनी छवि बदलता और मुझे आकर्षित करता जा

रहा है, आखिर कौन है। बचपन में जिस सवाल का सामना करने से बचती रही, वो बढ़ती उम्र के साथ कुछ इस तरह मुझे परेशान करने लगा कि विवश होकर मैंने गाँधी को पढ़ने का फ़ैसला कर डाला। यह उन फैसलों में से एक था, जो आजकल के जिज्ञासारहित बच्चों व बड़ों के लिए ले पाना असंभव-सा होगया है।

मैंने गाँधी को उनकी आत्मकथा से जानने की शुरुआत की। उसे पढ़ा तो मन को धक्का-सा लगा, मानो कोई सपना टूट गया हो। एहसास हुआ कि जिसे मैं अपना हीरो मान बैठी थी, वो मेरी ही उम्र का एक ज़िद्दी, अकड़ू और दूसरों पर अपनी बात थोपने वाला मनुष्य था।लेकिन सारी ज़िंदगी जिसकी वकालत की हो, जिसे खुद में पनाह दी हो, उसके ख़िलाफ़ सोचना क्या इतना आसान था? मैंने खुद को समझाया और दुबारा गाँधी को पढ़ने बैठी। इस बार हर बुरे में अच्छा ढूँढने की आस से। दोबारा पढ़कर सोच में कुछ बदलाव आया। लगा कि पहले वाले विचार शायद गलत थे। ये समझ में आया कि जब कोई मामूली इंसान समाज को बदलने निकलता है तो उसे पहले खुद में ज़रूरी बदलाव लाने होते हैं। जिसे मैं ज़िद समझ रही थी, वो दरअसल जुनून था अपनों के लिए कुछ कर दिखाने का, जिसने उनके हर प्रयास को सफलता तक पहुँचाया।

इस घटना के बाद से गाँधी को पढ़ने की ललक केवल बढ़ी ही है। सत्य और अहिंसा का जो पाठ बापू ने पढ़ाया है, उसे जीवन मे पूर्ण रूप से उतारने को सदैव प्रयासरत रहती हूँ। गाँधी ने मुझे मंज़िल तक पहुँचाने वाले रास्ते के सही चुनाव का महत्व बताया, आत्मनिर्भरता का महत्व बताया। ज़मीन से जुड़े रहने व सबको साथ लेके चलने का महत्व बताया। सीखने और सीखने का महत्व बताया। और यह बात मैं गर्व से कह सकती हूँ कि दूसरों के लिए जीना बापू ने मुझे बखूबी सिखाया है। अतः पढ़ना सफ़ल रहागाँधी आज मेरे लिए संस्कार हैं, रहन-सहन का तरीका हैं। और मैं

चाहती हूँ कि यही गाँधी हर घर में, हर मनुष्य में जन्म ले। निरन्तर पढ़ते रहने की सीख देने वाले इस आदमी को पढ़ना बेहद ज़रूरी है। अच्छाई से परिचय करने का यही सबसे आसान तरीका है।■■■

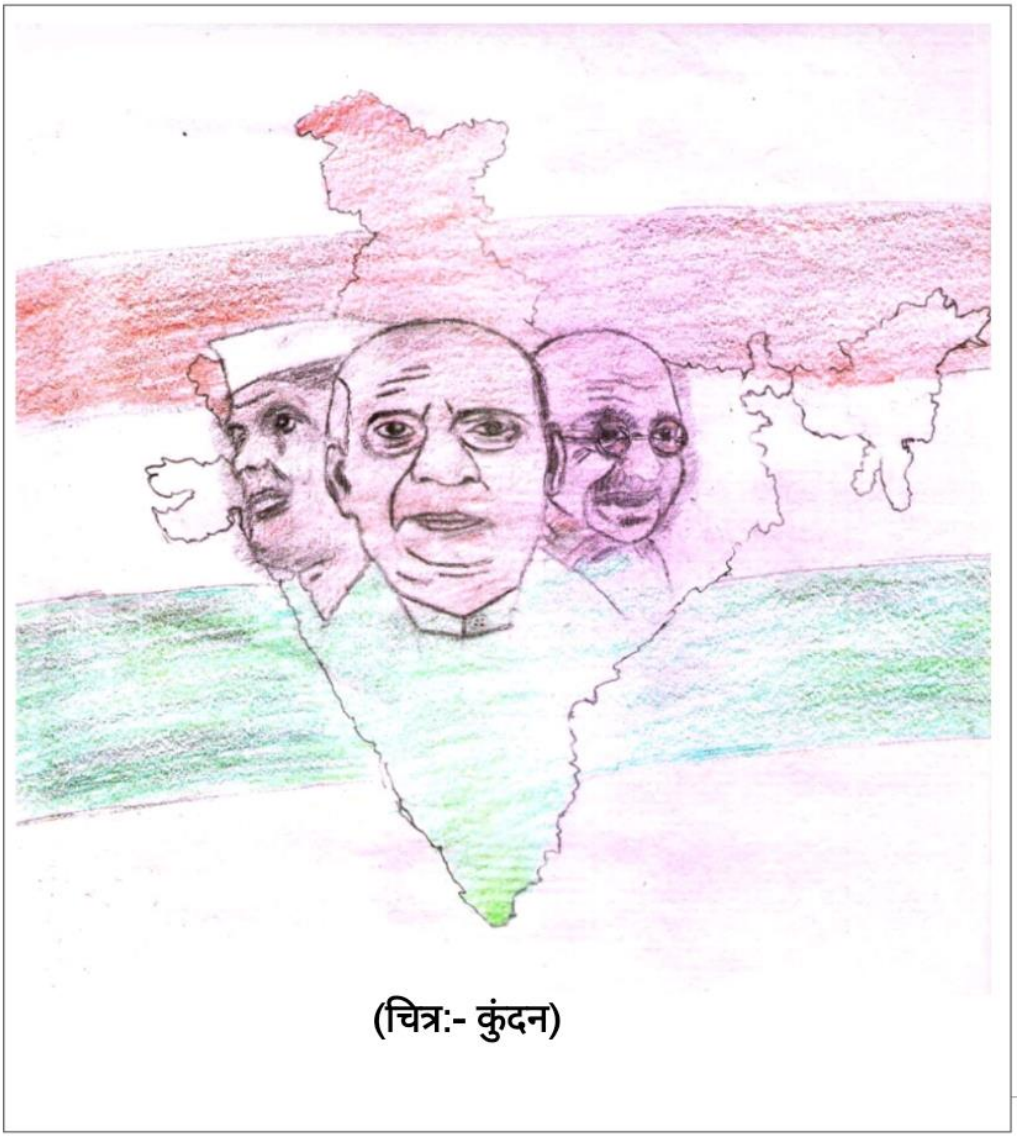

(चित्र:- कुंदन)

रणभूमि

- लोकेश चौहान

अभिनन्दन है तुम्हारा भारत में,
रणसम्राट बनकर तुम आए-हो।
भार त माँ के परमवीर पुत्र तुम,
घर महागर्व का सेहरा लाये हो।

वीर हो तुम, जाँबाज हो तुम,
भारत का अभिमान हो तुम।
पाक में वीर भारत रण की,
गौरवशाली पहचान हो तुम।

'अभिनन्दन' तुम्हें अभिनन्दन है!

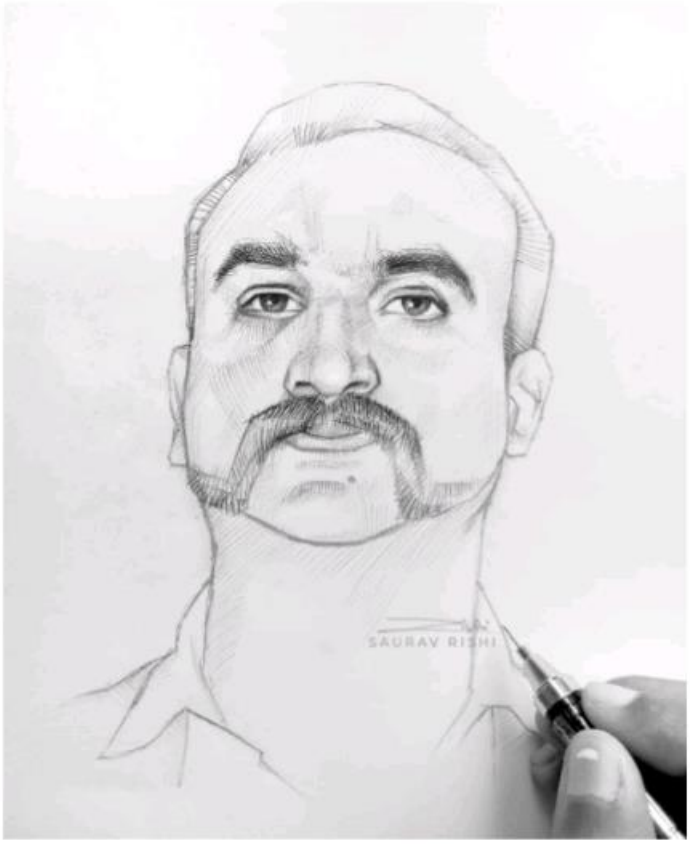

सरहद

- लोकेश चौहान

रो रहा वो सूना आँगन आज, रो रहे वो सारे पेड़,
कहते होंगे आपस में, कहाँ गए वो मेरे वो शेर।
ना आज गलियारा बोले, ना बोले अब वृक्ष कोई,
मायूसी-सी छाई है, गाँव की वो खुशहाली खोई।
पके हुए फल लटके आज पेड़ों की उन शाखों पर,
उन्हें खाने वाले गए इक नए सरहद की हिफाज़त पर।

राष्ट्र पिता

- आदित्य मिश्रा

राष्ट्र के हे प्राण जीवन धन अमर है।

दिव्य हे, अनुराग मंगलमय चिरन्तन
पुण्य हे, ध्वंसक सकल अभिशाप क्रंदन
रूप हे, तम-तोम भय के भम्र निकंदन
देव हे, आलोक जाग्रति स्वर प्रवर है।

दृष्टि बन अंधे दृगों में ज्योति लाये
हर्ष का नभ अभिनव सिर उठाये
ध्वज अहिंसा का लिये तुम मुस्कुराये
सत्य से अन्याय का जीता समर है।

बन गया संकल्प तव अरूणिम सवेरा
जिधर अपने तेज की किरणें बिखेरा
हो गया सब चूर्ण तम का कठिन घेरा
दृढ़वती स्वातंत्र्य का स्वर्णिम प्रहर हैं।

हे वंदनीय अर्चनीय सृजनकार
हे भारत की गौरव गरिमा अपार
हे नव मन अखिल सृष्टि के कलाकार
अधिकारों का उदघोषित नवभारत अमर है।

अखिल सृष्टि, नव वृष्टि, दृष्टि नव
नवोल्लास मति-गति-धृति अभिनव
पुण्य पाती के निश्चल नवयुग केशव

सत्य का असत्य पर जीता समर है।

लौह पुरूष: सरदार

- रवि

जिनकी वाणी और सोच में हो धार,
उसी को तो दुनिया कहती हैं सरदार।
राष्ट्रहित को कई काम किये उनने शुरू,
शिष्य गाँधी के वो, गाँधी थे उनके गुरू।
गुरु की बातों का उन्होंने सम्मान किया,
छोड़ सारे मोह प्रधानमंत्री पद दान किया।
हर काम करते अपनी सूझ-बूझ के साथ,
उनकी वाणी में भी कुछ अलग-सी थी बात।
सभी रियासतों को भारत में विलय कराया,
राष्ट्र भारत को विखण्डित होने से बचाया।
दुनिया कहती सरदार को वो लौह-पुरूष है,
लोहे से इरादों का वल्लभ वो राष्ट्रपुरुष है।

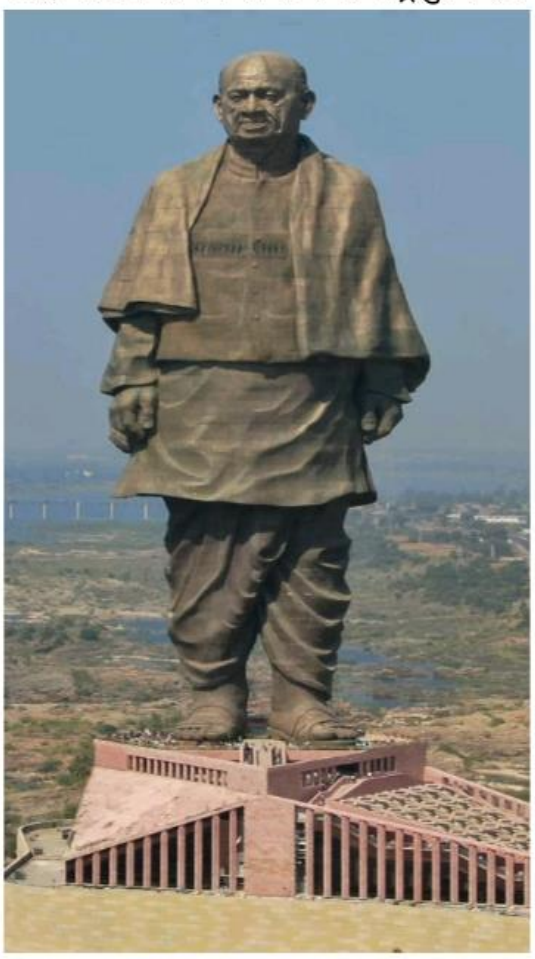

लाल को लील गया ताशकंद

- क्षितिज भट्ट 'विक्रमादित्य'

मुल्क का एक प्रधानमंत्री जो विदेश जाता है और एक ऐसे समझौते पर हस्ताक्षर करता है जिसके लिए वो खुद तैयार नहीं था। एक ऐसा प्रधानमंत्री जो युद्ध के उपरान्त ना केवल पड़ोसी शत्रु मुल्क की सारी बातें मानता है वरन् उसे खैरात भी देकर आता है। एक ऐसा नेता जिसके वापस आने पर एक दूसरे लापता नेता की सच्चाई सामने आने की संभावना बनती है पर वह नेता वापस नहीं आता और एक समझौते पर हस्ताक्षर के कुछ ही घंटों बाद मृत्यु को प्राप्त होता है। साथ-ही-साथ भारत से बाहर मृत्यु को प्राप्त होने वाला पहला और आजतक का एकमात्र प्रधानमंत्री बनता है। आज की कहानी उसी प्रधानमंत्री की कहानी है और उस प्रधानमंत्री का नाम है - लाल बहादुर शास्त्री तथा वह समझौता है - ताशकंद समझौता।

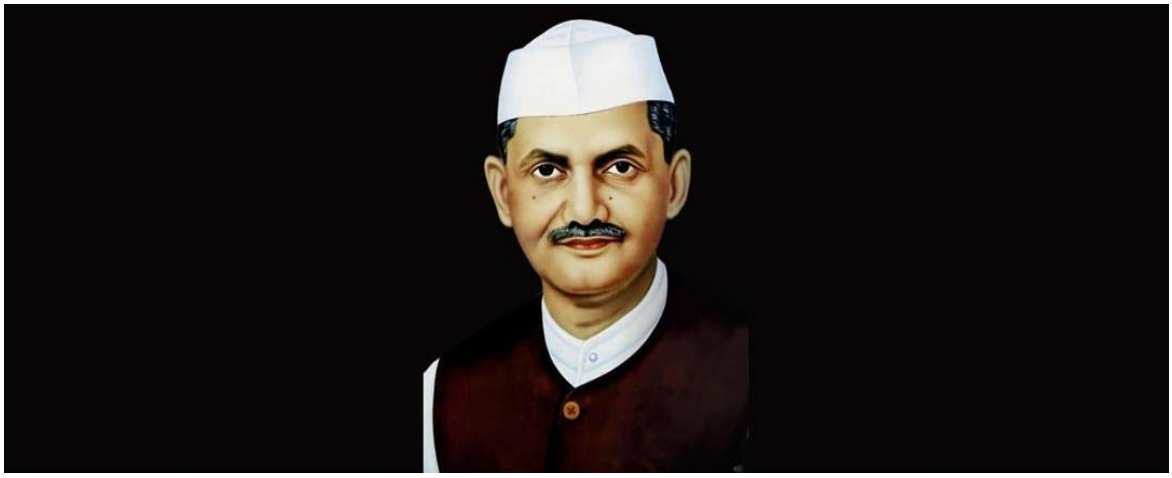

ये कहानी पाकिस्तान संचालित ऑपरेशन जिब्राल्टर के साथ शुरू होती है जिसके तहत पाकिस्तान कश्मीर के चार ऊँचाई वाले इलाकों गुलमर्ग, पीरपंजाल, उरी और बारामूला पर कब्जा करने की योजना बनाता है ताकि भारत से युद्ध लड़ने में आसानी हो पर हिन्दुस्तान को उसके मंसूबों का इल्म हो जाता है। हिंदुस्तानी फौज कार्यवाही करती है और ऑपरेशन जिब्राल्टर फेल हो जाता है। भारत की इस कार्यवाही से सरहद पार का क्रोध सारी सीमाओं को तोड़ देता है जिसकी परिणिति होता है - 1965 का युद्ध।

युद्ध के दौरान भारतीय सेना फिर हरकत में आती है। पाकिस्तानी सेना को खदेड़ा जाता है और भारतीय सेना की तैनाती लाहौर के बाहर तक हो जाती है लेकिन यहीं पर भारत के आर्मी चीफ जयंतो नाथ चौधरी एक गलती करते हैं जिसका वर्णन तत्कालीन रक्षा मंत्री यशवंत राव चव्हाण की पुस्तक '1965 वॉर, द इनसाइड स्टोरी: डिफेंस मिनिस्टर वाई बी चव्हाण्स डायरी ऑफ इंडिया-पाकिस्तान वॉर' में दर्ज है। उसमें लिखा गया है कि भारत के आर्मी चीफ डरपोक किस्म के इन्सान थे।वे बहुत जल्द डर जाते थे। चव्हाण उनको कहते थे कि सीमा पर जाओ मगर चौधरी सीमा पर जाने से डरते थे। युद्ध के दौरान 20 सितंबर 1965 को प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने आर्मी चीफ से पूछा कि अगर जंग कुछ दिन और चले तो भारत को क्या फायदा होगा? सेना प्रमुख ने कहा कि आर्मी के पास गोला-बारूद खत्म हो रहा है इसीलिए अब और जंग लड़ पाना भारत के लिए ठीक नहीं है। उन्होंने प्रधानमंत्री को सलाह दी कि भारत को रूस और अमेरिका की पहल पर संघर्ष विराम का प्रस्ताव मंजूर कर लेना चाहिए। शास्त्रीजी ने ऐसा ही किया लेकिन बाद में मालूम चला कि भारतीय सेना के गोला-बारूद का केवल 14 से 20 प्रतिशत सामान ही खर्च हुआ था। अगर भारत चाहता तो पाकिस्तान का नामो-निशान मिटाने तक लड़ता रहता लेकिन भारत के सेनाध्यक्ष की गलत जानकारी देने की गलती के कारण ऐसा नहीं हो सका।

ख़ैर जो गलती होनी थी वो हो गई। अब बारी बातचीत की थी और बातचीत की मेज माॅस्को में सजती है। वही माॅस्को जो उस समय भारत का करीबी समझा जाता था और शीत युद्ध के दौरान अमेरिका की पाकिस्तानपरस्ती के समय जो सदा भारत को सहायता मुहैया कराता था और यही कारण भी था कि वार्ता स्थल के रूप में अमेरिका पर रूस को तवज्जो दी गई।

वक्त बीतता है और 10 जनवरी की तारीख आ जाती है। इस दिन तक शास्त्री जी और पाकिस्तानी राष्ट्रपति अयूब खान के बीच कई दौर की वार्ता हो चुकी थी और इस दिन समझौते पर हस्ताक्षर भी हो गए पर यह समझौता भारत के लिए कुठाराघात था क्योंकि भारत ने हाजी पीर और ठिठवाल पाकिस्तान को वापस दे दिए थे जबकि पाकिस्तान ने 'नो वॉर क्लॉज़' को मानने तक से इन्कार कर दिया था। कोई नहीं जानता कि शास्त्री ने ऐसी शर्तें

क्यों मानी।शायद वो मुल्क वापस आते तो उनसे ये पूछा जाता पर नियति, उसे उसे तो कुछ और ही मंजूर था। एक सरकारी दस्तावेज के अनुसार, रात साढ़े बारह बजे तक सब कुछ सामान्य था पर तभी अचानक उनकी तबीयत खराब होने लगी जिसके बाद वहाँ मौजूद लोगों ने डॉक्टर को बुलाया। डॉक्टर आर एन चग ने पाया कि शास्त्री की साँसें तेज चल रही थी और वो अपने बेड पर छाती को पकड़कर बैठे थे। इसके बाद डॉक्टर ने इंट्रा मस्कूलर इंजेक्शन दिया। इंजेक्शन देने के तीन मिनट के बाद शास्त्री का शरीर शांत होने लगा, साँस की रफ्तार धीमी पड़ गई। इसके बाद सोवियत डॉक्टर को बुलाया गया। इससे पहले कि सोवियत डॉक्टर इलाज शुरू करते रात 1:32 पर शास्त्री की मौत हो गई।

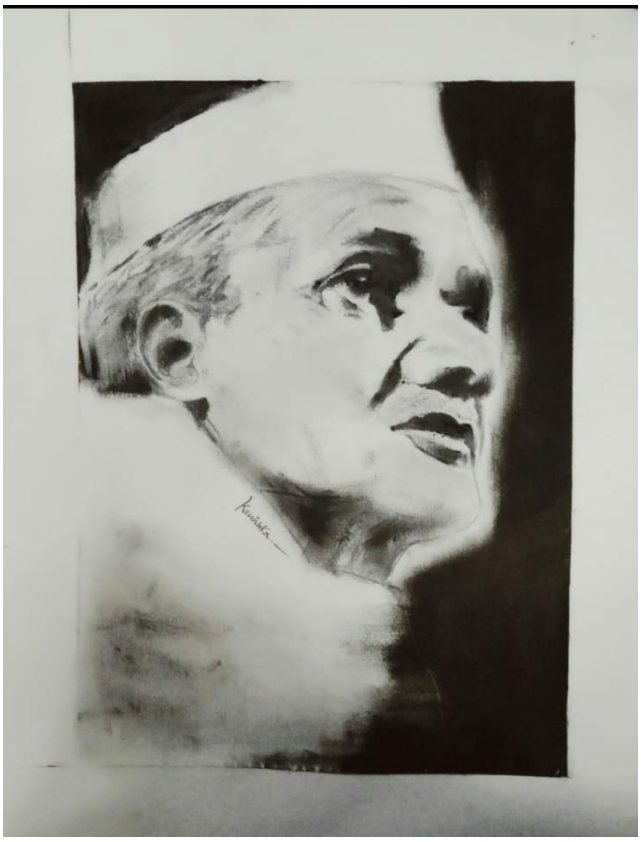

(चित्र:- कनिष्का)

हालाँकि ये मौत एक सामान्य मौत कभी नहीं मानी गई और उस रात हुए घटनाक्रम भी इसी ओर इशारा करते हैं। उस रात शास्त्री के होटल में प्रसिद्ध पत्रकार कुलदीप नैयर मौजूद थे। कुलदीप नैयर बताते हैं कि देर रात उन्होंने अपने घर पर फोन मिलाया। फोन उनकी सबसे बड़ी बेटी ने उठाया था। फोन उठते ही शास्त्री बोले, "अम्मा को फोन दो।" शास्त्री अपनी पत्नी ललिता को अम्मा कहा करते थे।उनकी बड़ी बेटी ने जवाब दिया, "अम्मा फोन पर नहीं आएँगी।" शास्त्री जी ने पूछा क्यों? जवाब आया क्योंकि आपने हाजी पीर और ठिथवाल पाकिस्तान को दे दिया है, वो बहुत नाराज हैं। शास्त्री को इस बात से बहुत धक्का लगा। इसके बाद वो परेशान होकर अपने कमरे में चक्कर लगाने लगे। हालाँकि कुछ ही देर में उन्होंने फिर से अपने सचिव वेंटररमन को फोन किया।वो भारत में नेताओं की प्रतिक्रिया जानना चाहते थे। उन्हें बताया गया कि अभी तक दो ही प्रतिक्रियाएं आई हैं। एक अटल

बिहारी वाजपेयी की और दूसरी कृष्ण मेनन की। दोनों ने ही उनके इस कदम की आलोचना की है।

कुलदीप आगे बताते हैं कि उस समय भारत-पाकिस्तान समझौते की खुशी में होटल में पार्टी चल रही थी और चूँकि वे शराब नहीं पीते थे तो वे अपने कमरे में आ और सो गए। सपने में उन्होंने देखा कि शास्त्री जी का देहांत हो गया है। वे बताते हैं कि उनकी नींद दरवाजे की दस्तक से खुली। सामने एक रूसी औरत खड़ी थी, जो उनसे बोली-"यॉर प्राइम मिनिस्टर इज डाइंग।"

कुलदीप नैयर बताते हैं कि वे तेजी से अपना कोट पहनकर नीचे आये। वहाँ पर रूसी प्रधानमंत्री कोसिगिन खड़े थे। उन्होंने कुलदीप नैयर से कहा, "शास्त्री जी नहीं रहे।" वहाँ पर बहुत बड़े से एक पलंग पर शास्त्री जी का छोटा-सा शरीर सिमटा हुआ पड़ा था। कुलदीप नैयर बताते हैं कि वहाँ पर जनरल अयूब भी पहुँचे और कहा-"हियर लाइज अ पर्सन हू कुड हैव ब्रॉट इंडिया एंड पाकिस्तान टुगैदर" (यहां एक ऐसा आदमी लेटा हुआ है, जो भारत और पाकिस्तान को साथ ला सकता था।)

लेकिन अयूब खान का ये कथन पाकिस्तान के सिर्फ एक चरित्र को दिखाता है। कहानी का एक दूसरा पक्ष भी है जिसका वर्णन अरशद शामी खान की पुस्तक 'थ्री प्रेसिडेंट्स एंड एन आइड: लाइफ, पावर एंड पॉलिटिक्स' में किया गया है। उन्होंने लिखा है कि अजीज अहमद को शास्त्री की मौत की खबर मिली।वो खुशी से झूमता हुआ भुट्टो के कमरे में पहुँचा और कहा- वो मर गया। भुट्टो ने पूछा- " दोनों में से कौन? हमारा वाला या उनका वाला?" इस कथन से ये सवाल उठता है कि क्या अयूब खान और लाल बहादुर शास्त्री में से किसी एक की हत्या निश्चित थी? क्या इस हत्या में भुट्टो का हाथ था?

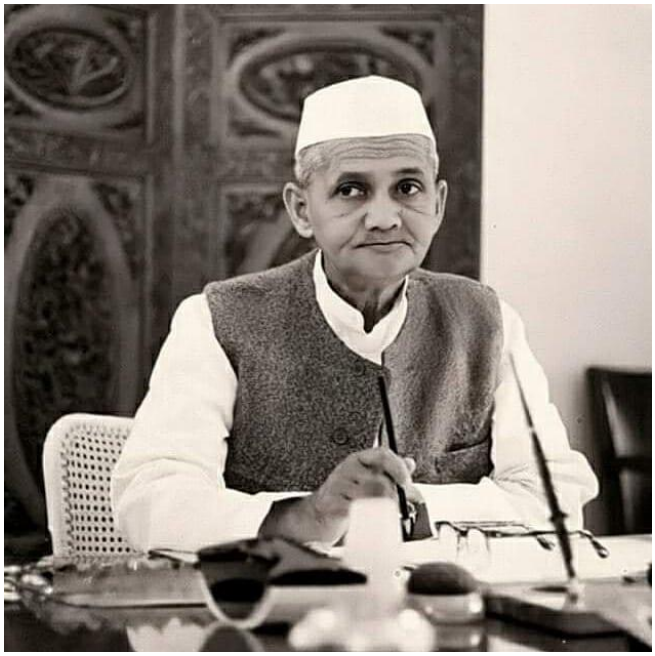

ये शास्त्री के मौत पर एक मत और है कि है कि इसमें सीआईए का हाथ था। दरअसल वर्ष 1996 में रॉबर्ट ट्रमबुल नाम के एक पूर्व सीआईए अधिकारी ने कहा था कि शास्त्री की मौत के पीछे सीआईए का ही हाथ था और एक पूर्व अधिकारी का ऐसा कथन संशय तो उत्पन्न करता ही है। यदि इन सबसे भिन्न सोवियत रूस का कहा माने तो शास्त्री जी को दिल का दौरा पड़ा था। ऐसा हो सकता है कि शास्त्री जी को इस बात की चिंता सता रही हो कि उन्होंने देश के लोगों से किया वादा पूरा नहीं किया। वो जानते थे कि इस समझौते से भारत में सब बहुत नाराज होंगे।भारतीय सेना सबसे ज्यादा मायूस होगी।शायद यही तनाव रहा हो और उन्हें दिल का दौर पड़ा हो पर रूस के इस सिद्धांत के बावजूद भी कुछ प्रश्न अनसुलझे ही रहते हैं-

1- शास्त्री जी का शव जब भारत लाया गया तो उनके परिवार ने मृत देह पर नीले निशान पाए परन्तु तब भी भारत एवं रूस में से किसी ने भी शव का पोस्टमार्टम कराने की जहमत नहीं उठाई।

2- उस दिन शास्त्री जी के निजी रसोइए राम नाथ ने खाना नहीं पकाया था जो कि सभी विदेशी दौरों में मात्र इसी कार्य के लिए उनके साथ रहता था। उसके स्थान पर उस समय रूस में भारत के राजदूत टी एन कौल के शेफ जान मुहम्मद ने खाना पकाया था। उम्मीद थी कि राम नाथ इस पर कोई स्पष्टीकरण देंगे पर इससे पहले ही उन्हें एक कार ने धक्का मार दिया और उनकी याददाश्त चली गई।

3- आम तौर पर बड़े नेता जिस कमरे में रुकते हैं उसमें एक घंटी लगी होती है ताकि जरूरत पड़ने पर किसी को बुलाया जा सके मगर शास्त्री जी के कमरे में कोई घंटी या बजर भी नहीं था।

4- शास्त्री जी जिस डायरी में अपने प्रतिदिन का घटनाक्रम लिखते थे, वो गायब थी जबकि उसके माध्यम से भारत के प्रतिकूल समझौते पर हस्ताक्षर के कारण पता चल सकते थे।

5- शास्त्री जी द्वारा प्रयुक्त थर्मस गायब था जिससे उसमें जहर होने की संभावना प्रतीत होती है।

6- सन् 2015 में इसी ताशकंद समझौते की एक तस्वीर सामने आई थी। जिसे देखकर ब्रिटिश फोरेंसिक एक्सपर्ट नील मिलर ने फोरेंसिक फेस मैपिंग रिपोर्ट के आधार पर दावा किया कि तस्वीर में उपस्थित लोगों में से एक शख्स नेताजी सुभाष

चंद्र बोस हैं। तो क्या शास्त्री जी ये सूचना लाने वाले थे कि नेताजी जिन्दा हैं? और क्या यही उनकी मौत का कारण बना?

बहरहाल ये सभी मात्र संभावनाएँ हैं, जिन पर मात्र मत रखा जा सकता है, सच तो तभी सामने आएगा जब आज-तक 'राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा' कहकर दबाई गई फाइलें बाहर आएँगी और बाहर आएगी वर्षों से प्रतीक्षित एक हकीकत।■■■

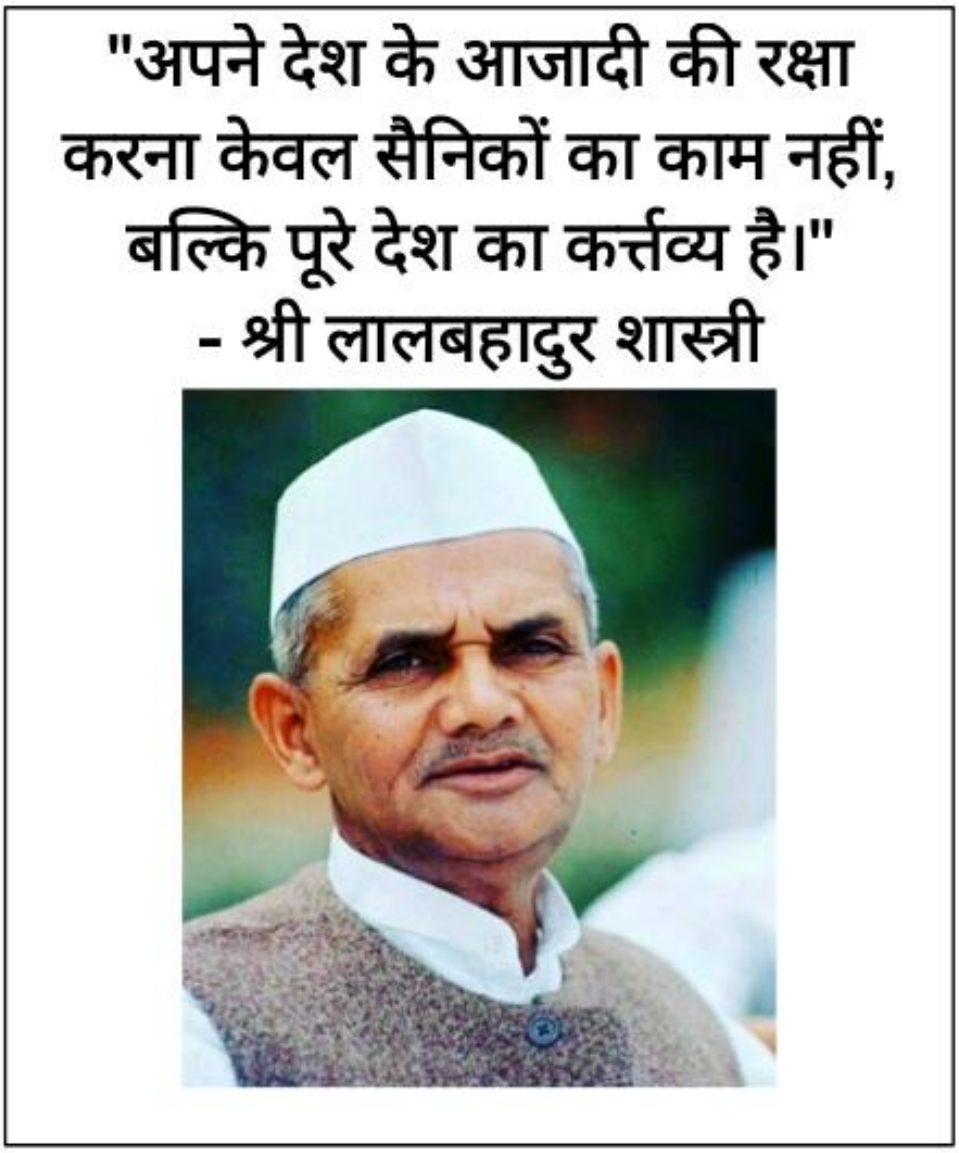

मानवता और गाँधी

- मृदुल सिंह

"अपने आप को खोजने का सबसे अच्छा तरीका है कि आप स्वयं को दूसरों की सेवा में खो दें।"

हम ऐसे दौर में जी रहे हैं जहाँ हर कोई अपने लिए काम कर रहा है। लोग अपने बगल वाले व्यक्ति की मुसीबत को अनदेखा करने का विकल्प चुन रहे है। शहरवासियों के माता-पिता वृद्धाश्रम में रह रहे क्योंकि उनके पास उनकी देखभाल करने का समय नहीं। बूढ़े चौकीदार को उसकी नौकरी से निकाल दिया जाता है क्योंकि वह उम्र के मारे कुछ छोटी-सी गलती कर देता है।

यह सब काल्पनिक बातें नहीं। सब ऐसा कुछ है जिसे हम अपने आस-पास घटित होते देखते हैं। हमारे समाज को स्वार्थ ने दो वर्गों के बीच बाँटकर, प्रचलित असमानता को किस हद तक बढ़ा दिया है, वह कल्पना से परे है। एक तरफ जहाँ कोई फ़ाईव स्टार होटल में खाना बर्बाद कर रहा है, तो दूसरी तरफ कोई अपनी रोटी कमाने के लिए संघर्ष कर रहा है। कोई नित अपनी पसंदीदा कार के नवीनतम मॉडल के लिए तरसता है, जबकि अन्य को साइकिल की जरूरत है। आर्थिक फासले भी तेजी से बढ़ने लगे और सबसे खराब बात ये है कि इन सबके बीच से मानवता कहीं खो-सी गयी है। गाँधीजी ने कहा था-**"मानव जाति की सेवा भगवान की सेवा है।"** लेकिन दुर्भाग्य से उनके विचारों, उनकी कल्पनाओं को आज अज्ञानता के अंधकार ने निगल-सा लिया।

मोहनदास करमचंद गाँधी, वह व्यक्ति जिसने अपना पूरा जीवन लोगों की सेवा करने, समाज के कमजोर वर्गों की उत्थान, राष्ट्रसेवा में व्यतीत कर दिया। गाँधीजी का समाज के प्रति योगदान, मानव जाति के लिए उनकी कल्पना, शब्दों से परे है। समाज के हर क्षेत्र में उनकी भूमिका इतनी मजबूत थी कि इसकी चर्चा न केवल देश में, बल्कि पूरी दुनिया में होती थी। अमेरिकी और यूरोपीय समाचार पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों और रेडियो में उनके विचारों और आंदोलनों पर चर्चा की गई। उनके विचारों का दुनिया भर के शीर्ष राजनेताओं द्वारा पालन किया गया। गाँधीजी पर्यावरणीय स्थिरता के अग्रदूतों में से एक थे। उन्होंने कहा था-**"पृथ्वी मनुष्य की आवश्यकता को पूरा करने के लिए पर्याप्त है, लेकिन मनुष्य के लालच को पूरा करने के लिए नहीं।"**

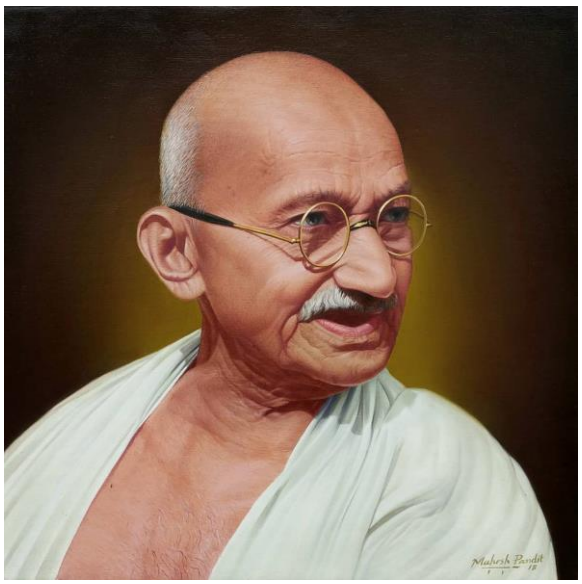

उन्होंने अपना जीवन समाज में व्याप्त विषमता के लिए लड़ते हुए बिताया। सर्वोत्कृष्ट गाँधीवादी सवाल-"एक व्यक्ति को कितना उपभोग करना चाहिए?" उनकी स्थिरता का मॉडल न केवल भारत में, बल्कि पूरे विश्व में प्रासंगिकता रखता है। गाँधीजी औद्योगिक विकास के खिलाफ चले अभियान और इसके बाद नवीकरणीय ऊर्जा और छोटे पैमाने पर सिंचाई प्रणाली को बढ़ावा देकर, जो एक ज़ोरदार पर्यावरणीय

आंदोलन बन गया, उन सब के पीछे की प्रेरक शक्ति थे। आज जहाँ भूमि विवादों में लोगो को जान से मार दिया जाता है, गाँधीजी कामयाब रहे थे एक राष्ट्र को प्रेम के साथ, अहिंसा के साथ आज़ादी दिलाने में। अहिंसा का पाठ जो उन्होंने अपने कार्यों, अपने शब्दों के साथ सिखाया है, हमेशा याद रखा जाएगा। यह मानव जाति के लिए उनका सबसे बड़ा योगदान था। गाँधीजी के सत्याग्रह के तरीके अधीनता के लिए एक दृढ़ अंत प्राप्त करने के लिए अनगिनत तरीकों से सफलतापूर्वक लागू किए गए।चाहे वो चिपको आंदोलन हो या 2011 में भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन, सब उन्हीं के द्वारा सिखाए गए पाठ से जीते गए है। उन्होंने सिखाया कि सबसे बड़े झगड़े भी बिना हथियारों के जीते जा सकते हैं।

गाँधीजी ने महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने और उनके लिए काम करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने देश भर में महिलाओं के उत्थान के लिए काम किया। सबसे उल्लेखनीय सेवा है अहमदाबाद में नियोजित महिला संघ, जो उत्पादक सहकारी समितियों में एक लाख से अधिक महिलाओं को संगठित करने के लिए ज़िम्मेदार है। उन्हें बाल और मातृ स्वास्थ्य प्रदान करने और आर्थिक आत्म-विश्वास को प्रोत्साहित करने के लिए एक सहकारी बैंक प्रदान किया। गाँधीजी ने दलितों के लिए, और उन सबके लिए काम किया जो समाज में उपेक्षित थे।

गाँधीजी ने अखिल भारतीय विरोधी-अस्पृश्यता लीग की स्थापना की और बाद में इसका नाम बदलकर हरिजन सेवक संघ रखा गया। उन्होंने हरिजन अर्थाथ "ईश्वर के बच्चों" शब्द रखा। अपमान जनक शब्दों के ऊपर एक शब्द जो उन्हें पहचानने के लिए उपयोग किया जाता है। एक सफलता का क्षण तब आया जब अस्पृश्यता को अंततः कानून द्वारा समाप्त कर दिया गया था। गाँधीजी ने उन सभी लोगों के लिए काम किया है जो या तो उनकी परिस्थितियों के शिकार थे या दूसरों के चंगुल

में फँस गए थे। उन्होंने अपने संघर्षों, अपनी समस्याओं के बावजूद दूसरों के अधिकार के लिए लड़ाई लड़ी। गाँधीजी इस बात का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करते हैं कि कैसे एक अकेला व्यक्ति भी समाज और यहाँ तक कि दुनिया में इतना अंतर ला सकता है।

आज भी गाँधीजी अपने द्वारा किए गए परिवर्तनों के लिए पहचाने जाते है। दुनिया पर उनके प्रभाव के कारण और समाज में उनके योगदान के लिए अभी भी वह लोगो को याद हैं। उनके आंदोलन और प्रसिद्ध उदहारण दुनिया में समानता और न्याय को प्रेरित करते हैं। आप समाज में उनके योगदान को केवल उतना ही नहीं जोड़ सकते हैं जितना उन्होंने अपने जीवनकाल में पूरा किया, क्योंकि यह उससे बहुत बड़ा है। सरकार प्रतिष्ठित सामाजिक कार्यकर्ताओं, विश्व नेताओं और नागरिकों को वार्षिक महात्मा गांधी शांति पुरस्कार प्रदान करती है। नेल्सन मंडेला नस्लीय भेदभाव और अलगाव को मिटाने के लिए दक्षिण अफ्रीका के संघर्ष के नेता, इस पुरस्कार के एक प्रमुख गैर-भारतीय प्राप्त कर्ता हैं।गाँधीजी ने हर संभव प्रयास किया जो वह परिस्थितियों को मजबूत करने के लिए कर सकते थे। लेकिन अब यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम जो कुछ करने की कल्पना करते हैं, उसको प्रत्यक्ष रूप से सामने लाएँ। यह उन लोगों को देने के अधिनियम के सीधे संपर्क में होने से आता है जो खुद से कम भाग्यशाली हैं। हमारे लिए नैतिक नींद की भावना में गिरना आसान है जब हम उन लोगों की वास्तविकताओं से सामना नहीं करते हैं जो हमसे कम भाग्यशाली हैं। एक बार जब हम वहाँ से बाहर निकलने और लोगों को देने के लिए सचेत प्रयास करते हैं तो हमारे पास अधिक भावनात्मक जागरूकता होती है और इससे हमें भावनात्मक रूप से बुद्धिमान बनने में मदद मिलती है।

जैउसा कि गाँधीजी ने कहा-"सौम्य तरीके से, आप दुनिया को हिला सकते हैं।" आइए हम यह प्रयास करें कि हम दुनिया को अच्छे के लिए बदलने का काम करें और खुद को उस व्यक्ति के सामने लाए जिसे हमारी ज़रूरत है।■■■

लो वक्त हो गया, अब मैं चलता हूँ

- सौरभ दिवाकर 'शौर्य'

लो वक्त हो गया है, अब मैं चलता हूँ,
इस माँ को छोड़,भारत माँ से मिलता हूँ।
इस माँ के आँचल में हूँ मैं तो अर्सों रहा,
अब उस माँ के आँचल में मैं सोने चला।

माँ, पत्नी, बेटी और घर सब छोड़ चला हूँ,
भारत माँ तेरी रक्षा को मैं हरदम खड़ा हूँ।
चाहता हूँ मैं माँ-बाप संग सुख-दुख बाँचना,
मगर देश सबसे पहले, उसपर आये आँच ना।
लो वक्त हो गया, अब मैं चलता हूँ...

नहीं दे सका मैं अपने बच्चों को एक बाप वाला प्यार,
क्योंकि मुझे हमेशा से है भारत माँ की रक्षा का ख्याल।
जा रहा हूँ मैं मगर दिख रहे आँसू मेरी बेटी की आँख में,
उसे कहकर चला हूँ- लौटूँगा करके दुश्मन को खाक में।

तेरे आँसू मेरी जान है, यह वतन मेरा अभिमान है,
इस वतन के लिए मैं क्या मेरा सर्वस्व कुर्बान है।
अटक आती है जान सीमा पर हमारी हलक में,
मगर थमते नहीं हम, हैं लड़ते जीतने तलक में।
लो वक्त हो गया, अब मैं चलता हूँ...

नहीं जानता पूरा कर पाऊँगा क्या राखी का वचन,
करना है अभी मुझे भारत मां की रक्षा का जतन।
वो घर में तेरे हाथों के बने हुए खानों का स्वाद,
दूर होता हूँ जब-जब घर से उनकी आती है याद।

खाई थी मैंने कसम हमेशा मिलेगा तुझे साथ मेरा,
रहूँगा साथ हमेशा तेरे, ना कभी छोड़ूँगा हाथ तेरा।
मगर कर्तव्य ने आज मुझसे फिर से बुलाया है,
गर्व करना तू तेरे घर राष्ट्र का ये संदेशा आया है।
लो वक्त हो गया, अब मैं चलता हूँ...

मजदूर-किसान और भारत

- मंजूर कलाम

जब भी अपने देश में विकास की बात होती है तो मुझे सीधे वो हरा-भरा खेत याद आता है जिसका मालिक व उसका परिवार दो जून की रोटी के लिए परेशान रहता है। ये भारतीय किसान माटी को भगवान मानता है, उस माटी से फसलें उगाता है। मगर विडंबना ये है कि वही फसलें बाज़ार में भाव की भूखी बोरियों में पड़ी रहती हैं, जिसका भाव बनिये या व्यापारी के मन का खेल बनकर रह जाता है, और कुछ भी नहीं। बेचारा किसान हर गर्मी की तेज दुपहरी में पसीने से लथपथ, पेड़ की छाँव में बैठा, अपनी हरी-भरी फ़सल को देख मन ही मन खुश होता और सोचता है कि इस बार तो सारा कर्ज चुका दूँगा। आशा तो यह रखता है कि इन बैंकों और साहूकारों से इस दफ़ा तो छुटकारा मिल जाएगा, बैंक से कर्ज नहीं लेना पड़ेगा। लेकिन क्या करे, बेचारे की मज़बूरी है। बदहाली का चित्र कुछ ऐसा है कि आज ये हालत देश के लगभग सभी किसानों की है। कश्मीर से कन्याकुमारी, किबिथु से गुहार मोती तक, इन मेहनतकश किसानों, मजदूरों और चरवाहों के एक जैसे हालात हैं। ये धरती और इंद्रदेव की पूजा करते हैं। मानसून के बारे में तो पता नहीं लेकिन बसंत ऋतु का अच्छा ज्ञान है इनको। एक किसान जुताई-बुआई से लेकर कटाई और फ़सल को भूसे से अलग करने तक कितनी कठिनाईयों का सामना करता है ये तो उनका ही जी जानता है। जाड़े की ठंड में जब ठन्डे पानी में खड़ा रहता है तो उनकी हालत क्या होती होगी ये सिर्फ उसे ही पता है। अगर किसान फ़सल उगाना बंद कर दे तो इन बड़े-बड़े उघोगों की मिनटों में हवा निकल जाएगी।

ये जो बड़े-बड़े उद्योग-कारखाने और भवन बने हुए हैं, इन सबको बनाने वाला मजदूर एक झोंपड़ी में रह रहा है। इतना बड़ा मकान बनाने के बाद मजदूर को उसी मकान में प्रवेश नहीं मिलता। बेचारे मजदूर एक-एक पत्थर, बजरी, मिट्टी, रेत, सीमेंट और अन्य सामग्रियों को अपने कंधे के बल पर ढोकर, सभी को जोड़कर इन इमारतों को इतना बड़ा आकार देता है परन्तु भवन तैयार होने के बाद उन्हें उनके दरवाजे तक भी नहीं जाने दिया जाता है। सुबह सूर्योदय से सूर्योस्त तक वो एक ही रफ्तार से काम करता है, अपने हक और पसीने की कमाई पर जीता है। ना गर्मी देखता, ना ही जाड़े की ठंड। बस निरंतर काम में लगा रहता है। मगर मिलता क्या है? मेहनत की तुलना में कुछ भी नहीं। ये नेता इन किसानों-मजदूरों के नाम पर राजनीति करके शासन में आ तो जाते हैं, लेकिन जब उनके लिए काम करने की बात होती है, तो सब अपने हाथ खड़े कर लेते हैं। करोड़ों के भत्ते खा जाने वाले ये नेता, आजादी के इतने सालों बाद तक इस कृषिप्रधान देश में इन किसानों-मजदूरों व अन्य कामगारों को उनका हक नहीं दिला पाए, उनके लिए बेहतर दैनिक भत्ते की व्यवस्था का प्रबंध न कर पाए। ये खुद में ही बेहद शर्म का विषय है।

कभी शासन-प्रशासन वालों ने सोचा है कि अगर वे वहाँ बैठे हैं तो किसके बल-बुते पर? देश के विकास का आधार किसान और मजदूर हैं परन्तु सबसे ज्यादा शोषण भी इनका ही होता है। स्थिति भयावह है, और एक राष्ट्र के लिए अत्यंत लज्जाजनक भी। हम जिनके बलबूते खा-पी रहे, घरों में रह रहे, अगर उन्हें ही बेहतर व्यवस्था नहीं उपलब्ध करवा पाए तो विकसित देश व विश्वगुरु बनने की हमारी कल्पना, कल्पना ही रह जाएगी। इसलिये सरकारों व प्रशासन की जिम्मेदारी है कि वे ईमानदारी से समाज के किसान-मजदूर तबके लिए भी बेहतर व्यवस्था लाये, ताकि भारत पुनः विश्वगुरु बनने की ओर अग्रसर हो।■■■

शास्त्री स्वाभिमानी

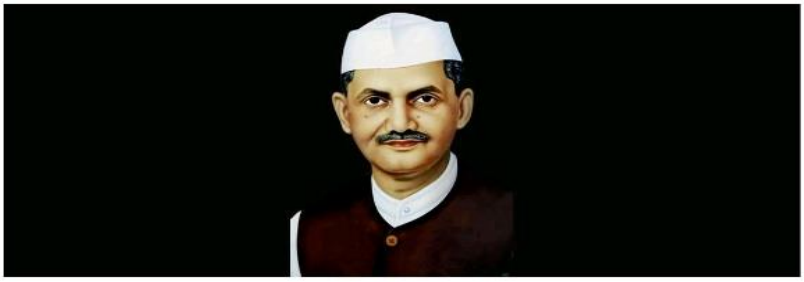

एक बार की बात है, शास्त्री जी स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान जेल में थे। घर पर उनकी पुत्री बीमार थी और उसकी हालत काफी गंभीर थी। उनके साथियों ने उन्हें जेल से बाहर आकर पुत्री को देखने का आग्रह किया। पैरोल भी स्वीकृत हो गई, परन्तु शास्त्री जी ने पैरोल पर छूटकर जेल से बाहर आना अपने आत्मसम्मान के विरुद्ध समझा ! क्योंकि वे यह लिखकर देने को तैयार न थे कि बाहर निकलकर वे आन्दोलन में कोई काम नहीं करेंगे। अंत में मजिस्ट्रेट को पन्द्रह दिनों के लिए उन्हें बिना शर्त छोड़ना पड़ा। वे घर पहुँचे, लेकिन उसी दिन बालिका के प्राण-पखेरू उड़ गए। शास्त्री जी ने कहा, "जिस काम के लिए मैं आया था, वह पूरा हो गया है। अब मुझे जेल वापस जाना चाहिये।" और उसी दिन वो जेल वापस चले गये।

क्या गजब की सत्यनिष्ठा और ईमानदारी थी उनमें। इन्हीं सब गुणों के कारण उन्हें नेहरू जी का उत्तराधिकारी बनाया गया। यद्यपि कोई सोचता भी न था कि वे प्रधानमंत्री (Prime Minister) बनाये जायेंगे। आज के राजनेताओं को उनके आदर्शों का पालन करना चाहिए, जिससे अपना देश एक साफ़-सुथरी छवि वाला एवं भ्रष्टाचार मुक्त देश बन सके।

‘अभिव्यंजना’ परिवार द्वारा आयोजित वस्त्रदान शिविर

- शुभांजल

अगर मैं निजी तौर पर बताऊँ तो ये वस्त्रदान शिविर मेरे लिये बेहद खास रहा। 'अभिव्यंजना' के प्रेसिडेंट के तौर पर, एक लीडर के तौर पर और इन सबसे भी ज्यादा जरूरी ये कि एक इंसान के तौर पर सीखने को बहुत कुछ मिला। ऐसा पहली बार हुआ कि 'अभिव्यंजना' या किसी भी डिबेट सोसाईटी ने ऐसी कोई पहल की हो। और विश्वास रखिये ये शिविर हमारी ब्लूप्रिंट का हिस्सा नहीं था। ये तो बस बातों-बातों में एक इच्छा के तौर पर जाहिर हुई जब एक शाम साक्षी ने रास्ते पर चलते-चलते बातों-बातों में मुझसे ये कहा कि 'काश' हम भी एक क्लोथ डोनेशन कैम्प लगा पाते। इरादा अच्छा था और करने में कोई हर्ज भी नहीं। मैं 'अभिव्यंजना' नामक एक वाद-विवाद, कविता एवं रचनात्मक समाज का प्रेसिडेंट जरूर हूँ, मगर मैं इस बात को भलीभाँति समझता हूँ कि किसी भी इंसान का डिबेटर, कवि या लेखक होने से पहले इंसान होना जरूरी है। और इस प्रकार के सामाजिक कार्य एक इंसान को, एक रचनात्मक इंसान को और बेहतर ही बनाते हैं। इसलिए अगली सुबह कॉलेज ऑफिस में कुछेक पेपर-पत्री करके हमनें उसके अगले दिन कॉलेज में अपना एक सप्ताही वस्त्रदान शिविर लगा दिया।

कॉलेज से हमें इस कार्य को लेकर बेहद प्रोत्साहन मिला। खासकर कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ० सूरजभान भारद्वाज सर ने हर बार की तरह इस बार भी जो मनोबल बढ़ाया, वो बेहद खास था। अनिल सर, जोकि मोतीलाल नेहरू कॉलेज के नॉन-रेगुलर कॉलेज के प्रिंसिपल हैं, उनसे मैंने ज्योति दी के सुझाव पर रविवार को भी कॉलेज में शिविर लगाने की इजाजत माँगी और उन्होंने दो पल की भी देरी किये बिना हमें अनुमति दे दी। यहाँ तक कि उन्होंने सन्डे कॉलेज के बच्चों को भी हमारे इस शिविर का मैसेज व पोस्टर पहुँचा दिया ताकि वे भी वस्त्रदान करने आएँ। सबसे बड़ी बात ये रही कि हमारे दो प्रोफेसरों ने भी अपने कपड़े इस वस्त्रदान में दिए। हमारी हिंदी विभाग के प्रोफ़ेसर डॉ० शब्बीर सर के कान में एक दिन क्लास लेते-लेते ही इस शिविर की खबर लगी और उन्होंने दो दिन बाद खुद अपने कपड़े हमें लाकर दे दिये। हिंदी विभाग के विभाग प्रमुख डॉ० भास्कर सर ने तो हमें लगातार प्रोत्साहित किया। शिविर के अंतिम दिन वे भी कपड़े लेकर आये और आकर मेरे हाथ में अपने कार की चाभी देकर बोले-"कपड़े गाड़ी में रखे हैं। ज्यादा हैं, मैं अकेले नहीं ला पाता। तुम निकलवा लो गाड़ी से।"

कॉलेज तो कॉलेज,दिल्ली के ही अन्य महाविद्यालयों व बाहर से भी कई साथियों ने भी दिल खोलकर वस्त्रदान किया।हमनें ये सुविधा रखी थी कि यदि किसी को दूरी की समस्या हो रही हो तो हमें बता दे,हम खुद आकर कपड़े ले जायेंगे। मगर खबर लगी कि अधिकतर लोग खुद ही कपड़े देने आ रहे थे।इन सहयोगों ने ही इस वस्त्रदान को इतना बेहतरीन बनाया।सच कह रहा हूँ, कपड़े काफी कम दिख रहे थे शुरू में।मगर जब खुलने लगे तो संख्या चार हजार के पार कर गयी। और अगर मैं आपसे पूछूँ कि ये चार हजार कपड़े दिए कितने लोगों ने होंगे?तो आप क्या जवाब देंगे? 200? 300? 400? 500? या 600 के आसपास कुछ?है न?मगर विश्वास रखिये ये चार हजार कपड़े महज 60 लोगों के हैं।जी हाँ,सिर्फ 60 लोगों ने ही इतना बड़ा स्कोर खड़ा कर दिया। मेरे जो साथी रजिस्ट्रेशन डेस्क पर बैठते थे,उन्होंने जब लोगों के लिहाज से ये संख्या देखी तो उन्हें काफी कम लगी।मगर जब कपड़े बाहर आने लगे तो सबने शुक्र मनाया कि अच्छा हुआ बस 60 लोग थे।थोड़ी और जनसंख्या होती तो आँकड़ा कहाँ जा बैठता।

सारे कपड़े कॉलेज से लाकर मेरे ही फ्लैट में रखे गए थे और जब हम हर राउंड के बाद वापस आते तो मन में ये सवाल आता कि यार ये कपड़े घट क्यों नहीं रहे। नौ राउंड में हमनें कपड़े बाँटे। दिन में भी जाते, और रात में भी। एक-एक दिन में दो-दो राउंड। मगर सातवें राउंड तक लगा ही नहीं कि कपड़े कम हो रहे। जितने थे उतने ही लग रहे थे। बड़ी-बड़ी नीली प्लास्टिक में थे कपड़े और एक भी प्लास्टिक खुलती तो ऐसा लगता कि समुद्र का पेट चीर दिया गया हो और उसमें से अनगिनत बेशमकीमती चीजें बाहर निकल ! मैं वाकई प्रशंसा करता हूँ 'अभिव्यंजना' में अपने साथियों का जिन्होंने रात-रात भर बाहर जाकर जरूरतमंदों के बीच इतने कपड़ों को बाँटने का साहस दिखाया। काम करने की उत्साह और खुशियाँ बाँटने की ललक ने सबको इतनी ऊर्जा से भर रखा था कि कोई थकने और थमने का नाम ही नहीं ले रहा था। जिस रोज सब विजयादशमी पर रावण जला रहे थे, उस दिन भी ये लोग कपड़े वितरित कर उन जरूरतमंदों के बीच दशहरा मना रहे थे। ये उपहार था आप सबकी तरफ से जो इन बच्चों के जरिये उनलोगों तक पहुँचा जिन्हें शायद इन कपड़ों की हमसे भी अधिक जरूरत थी। आपके सहयोग से उन्हें कुछ मदद मिल गयी।

मैंने इस वस्त्रदान शिविर के जरिये अपनी नजरों के आगे इन बच्चों में परिवर्तन पाया, इन्हें बेहतर होता देखा। जो लोग कुछ दूरी चलने के लिए भी गाड़ी इस्तेमाल करते थे, वे वस्त्रदान के लिए एक-एक दिन में 15-15 किलोमीटर चले। जो लोग बिना एसी के सांस नहीं लेते थे, उन्होंने दिल्ली की गर्म दुपहरी में जलती सड़क पर चल-चलकर लोगों के बीच कपड़े बाँटने में सहयोग दिया। जो अपने आलसी स्वभाव के लिए प्रसिद्ध थे, उन्हें मैंने अपनी नजरों के सामने जल्दी जगते और लगातार काम करते देखा। जिनके मुँह से एक बोली फूटने तक की देरी में आप धरती की चार परिक्रमा कर लें, मैंने ऐसे बच्चों को खुद पूरे कॉन्फिडेंस में लोगों से खुद जा-जाकर बात करते देखा। अक्सर मैं ही लीड करता था सबको, इस वस्त्रदान शिविर में इन सबने मुझे लीड किया। मैं बस पीछे खड़ा इन्हें बेहतरीन इंसान बनते देख रहा था। पता नहीं इन्होंने खुद को इतना ऑब्जर्व किया या नहीं, मगर मैंने इन्हें बेहतर होते देखा।

मैं दिल्ली की दुनिया के चप्पे-चप्पे से वाकिफ हूँ। मैंने यहाँ दिन का उजाला देखा है, तो रात की अँधियारी भी। मैं जब 'अभिव्यंजना' का प्रेसिडेंट बना था तभी जाहिर कर दिया था कि एक लीडर के तौर पर अपने कार्यकाल में मैं फॉलोवर्स नहीं, लीडर्स तैयार करूँगा। एक लीडर का काम भी यही है। और मुझे बेहद खुशी हुई कि इस वस्त्रदान शिविर के बहाने इतने कम वक्त में मैंने इन बच्चों के अंदर वो लीडरशिप क्वालिटी देखी जिसकी क्लास लेने को लोग लाखों रुपये खर्च कर देते हैं। दिल्ली की इन ऊँची इमारतों के नीचे एक ऐसी दुनिया भी है जोकि इन बहुमंजिले भवनों की खिड़कियों से दिखते नहीं, या लोग देखना नहीं चाहते। मैंने वो दुनिया देखी है, और उससे खुद में एक परिवर्तन भी पाया। मैं चाहता था कि सब उस बात को महसूस करें कि चमकदार कपड़ों और तेज रफ्तार भरी गाड़ियों में हम सड़क किनारे जिस दुनिया से दूर ओझल हो जाते हैं, हमें उनके लिए ही कुछ करना है। मैं कल ही कहीं एक उक्ति पढ़ रहा था कि हम हर इंसान की मदद शायद नहीं कर सकते, मगर हर इंसान किसी-न-किसी की मदद जरूर कर सकता है। और देखिये आपने आज वस्त्रदान करके किसी की बहुत बड़ी मदद कर दी।

जरा उस दृश्य की कल्पना करिए कि जिस कपड़े को छोटा होता देख आप नया कपड़ा खरीदने को घर में नाक-भौं सिकोड़ रहे थे, और आज आपके उन्हीं कपड़ों को पहन कोई खुशी में झूम रहा होगा। जिन कपड़ों को हम पुराना कहकर कहीं बक्से में बन्द कर देते हैं, उन पुराने कपड़ों को खरीदना भी किसी के लिए सपने जैसा ही होता है। आपके छोटे पड़ते कपड़े किसी के चेहरे की बड़ी मुस्कान बन सकते हैं, और बने भी। आप खुदपर गर्व कर सकते हैं जब आप कपड़े निकाल रहे होंगे तब कहीं-न-कहीं आपके मन में भी आया होगा कि चलो यार, किसी जरूरतमंद की मदद हो जाएगी।और विश्वास रखिये दुनिया को इसी भावना की सबसे अधिक जरूरत है। मैंने नजरों के सामने लोगों को संवेदनशील होते देखा।एक प्रकार की क्लास ही थी ये हम सबके लिए। बहुत कुछ सीखे हम सब। इन बच्चों ने भी रात को वस्त्रदान के लिए बाहर निकलने के दौरान उस दुनिया को देखा जहाँ खुद की मौजूदगी की हम सोच भी नहीं सकते।कोई फुटपाथ पर सो रहा था, कोई फ्लाईओवर के नीचे। कोई ठेले पर,कोई ठंड में पत्थर पर। और ये लोग समाज के उस दर्जे से आते हैं जहाँ लोगों के पास कपड़े की दूसरी जोड़ी नहीं होती।

इस वस्त्रदान शिविर के दौरान मैंने खुद को और बेहतर होता पाया। वस्त्रदान की इस पूरी प्रक्रिया में मैं पीछे खड़ा अपने इन साथियों को ये कपड़े देते देख रहा था। इन्हीं में से एक ने मेरी एक शर्ट, जोकि मुझे बेहद पसन्द थी, एक लड़के को भेंट की। उसे शर्ट देता देख मेरे दिमाग में बचपन की कोई घटना याद आ गयी। वस्त्रदान कोई नया कॉन्सेप्ट नहीं हमारे परिवारों में। बचपन में भी हमारे कपड़े ऐसे ही जरूरतमन्दों के बीच दे दिए जाते थे। उस उम्र में जब मेरा कोई पुराना कपड़ा मैं किसी दूसरे बच्चे को पहने देखता तो काफी गुस्सा आ जाता मुझे। लड़ने-लड़ने को हो जाता था मैं। मगर इस वस्त्रदान शिविर के दौरान जब मेरी एक नई नवेली शर्ट मैंने उस लड़के के हाथों में देखी तो मुझे गुस्सा नहीं आया। उल्टे खुशी और संतुष्टि हुई। पता नहीं ठीक है, मगर उस पल में लगा कि हाँ, अब मैं बड़ा हो गया हूँ। शायद आपने भी कुछ ऐसा ही महसूस किया होगा।

और जानते हैं, ये बात सिर्फ वस्त्रदान की नहीं। आप अन्य रूपों में भी जरूरतमंदों की सहायता कर सकते हैं। सहयोग का कोई पैमाना नहीं होता। अगर अब भी आपके पास ऐसे दान करने को कपड़े वगैरह हैं, तो अपने आसपास भी बाहर टहलिए। देखिये बाहर, जरूरतमंद आपको अपने-आसपास ही दिख जायेंगे। कोशिश करिये कि थोड़ा संवेदनशील बनें। ये संवेदनशीलता ही एक मनुष्य और मशीन में फर्क लाती है। और जहाँ तक मेरा ख्याल है, आपलोगों में से अधिकतर लोग अभी मनुष्य ही हैं। भागादौड़ी में मशीन मत बन जाइये। इसलिए अपनी संवेदनशीलता बनाये रखिये, दुनिया को अभी आपकी सख्त जरूरत है...

☆ द कोलाज ऑफ हैप्पीनेस⭐

अभिव्यंजना

वाद-विवाद, कविता एवं
रचनात्मक लेखन समाज

धन्यवाद